



ध्येय IAS®

most trusted since 2003

इतिहास

(सामान्य अध्ययन)

भारतीय संस्कृति एवं विरासत

(स्थापत्य कला - I)

द्वारा

विजय वेद सर

FACE TO FACE CENTRES

MUKHERJEE NAGAR (Head Office) : A-12/13 ANSAL BUILDING, DR. MUKHERJEE NAGAR, DELHI - 110009, 9205274741/ 42/ 43/ 44
RAJENDRA NAGAR : 25B, SECOND FLOOR, PUSA ROAD NEW DELHI - 9205274743, 9205274745
LAKSHMI NAGAR : 1/53, 3RD FLOOR, LALITA PARK, LAXMI NAGAR, DELHI-92, 011-43012556, (+91)- 9311969232
RESIDENTIAL ACADEMY : 28/1A, KNOWLEDGE PARK III, GREATER NOIDA, UTTAR PRADESH - 201306, PHONE: 092053 36037/38/39
PRAYAGRAJ : IIND & IIIRD FLOOR, SHRI RAM TOWER, 17C, SARDAR PATEL MARG, CIVIL LINES, ALLAHABAD PH.: 0532-2260189, 08853467068
LUCKNOW- ALIGANJ CENTRE : A-12, SECTOR-J, ALIGANJ, LUCKNOW PH.: 0522-4025825, 09506256789
LUCKNOW- GOMTI NAGAR CENTRE: CP-1, JEEWAN SHOPING COMPLEX, VIRAM KHAND-5, NEAR HUSARIYA CHAURAHA, GOMTI NAGAR, LUCKNOW -227106 PHONE: +91 7234000501, 7234000502
BHUBANESWAR : OEU TOWER, THIRD FLOOR, KIIT ROAD, PATIA, BHUBANESWAR, ODISHA 751024, PH.: +91 9818244644, 7656949029

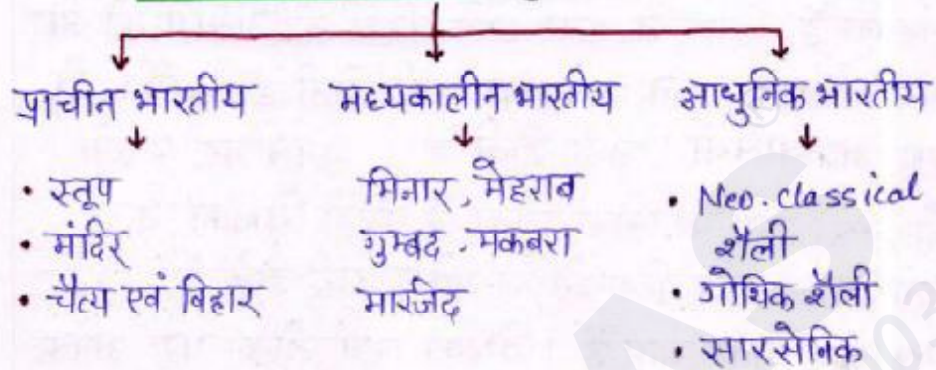
LIVE STREAMING CENTRES

Ahmedabad 9879113469/8000162499
 Aligarh 9837877879
 Azamgarh 7617077051
 Bahraich 7275758422
 Bareilly 9917500098
 Chandhigarh 8146199399/9050888338
 Faridabad 9711394350
 Gorakhpur 7080847474
 Gwalior 9893481642
 Haldwani 8077728957/7060172525
 Hisar 9996887708
 Jabalpur 8982082023

Jodhpur 9529989199/9928965998
 Jalandhar 9888777887
 Kanpur 7275613962
 Kurukshetra 8950728524
 Lucknow Alambagh 7518373333
 Ludhiana 9876218943/9888178344
 Moradabad 9927622221
 Patiala 9041030070
 Patna 9334100961
 Rewa 9926207755
 Varanasi 7408098888

भारतीय कलाएं

स्थापत्य कला / वास्तुकला



● प्राचीन भारतीय स्थापत्य

स्तूप स्थापत्य

- संकल्पना एवं बनावट
- प्रकार
- दर्शन
- विकास के चरण
- महत्वपूर्ण स्तूपों में तुलनात्मक अध्ययन
 - सांची
 - भरहुत
 - अमरावती

संकल्पना एवं बनावट

स्तूप का शाब्दिक अर्थ भूप, भूहा या ढेर होता है। स्तूप समाधि का प्रतिक प्रतीक स्थापत्य संरचना होता है जो किसी संत आचार्य आदि की स्मृति में उसके शारीरिक

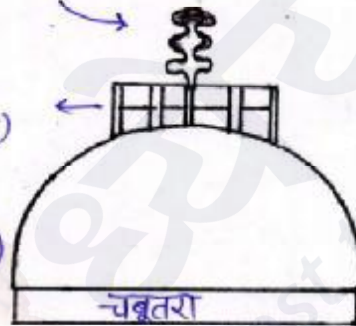
अवशेषों या पवित्र सामग्री के ऊपर बनाया जाता है।

स्तूप का मूल भाग 'अण्ड' कहलाता है जो अर्धगोलाकार उल्टे कटोरे की भांति बना एक महत्वपूर्ण संरचना है। अण्ड के ऊपर आड़े-तिरछे कई पत्थरों को जोड़ कर 'हर्मिका' नामक संरचना बनी होती है। हर्मिका के ऊपर 'क्षत्रावलियाँ' बनी होती हैं। भूतल पर स्तूपों की चारों तरफ से घेरा जाता है जिसे 'वैदिका' कहा जाता है ज चारों दिशाओं में प्रवेश द्वार होते हैं जिसे तोरण द्वार कहा जाता है। वैदिका एवं तोरण पर अनेक घटनाओं के शिल्प बने होते हैं।

क्षत्रावलियाँ (शिखा)

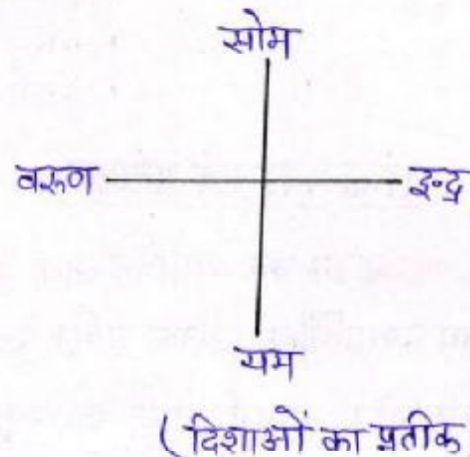
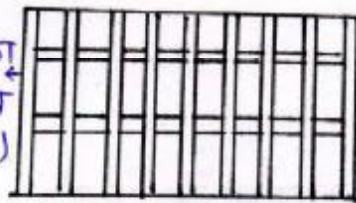
हर्मिका
(पवित्रता)

अण्ड
(शांति)



तोरण
द्वार

वैदिका
(पवित्र
भूमि)



स्तूपों के प्रकार मुख्यतः चार प्रकार

1. शारीरिक स्तूप - : बुद्ध या किसी संत के शारीरिक अवशेषों पर बना।
2. परिभौगिक स्तूप - : संतों/आचार्यों द्वारा उपभोग की गयी वस्तुओं पर बना।
3. उद्देश्यिक स्तूप - : बौद्ध धर्म के प्रचार के उद्देश्य से बना।
4. पूजार्थिक स्तूप - : पूजा के उद्देश्य से बना।

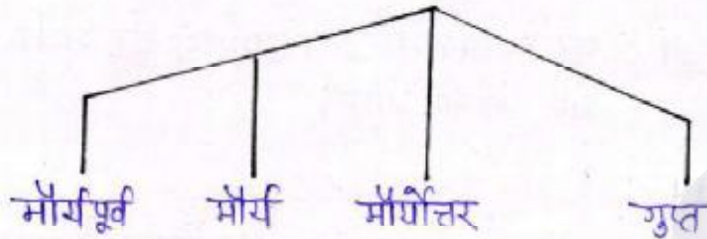
स्तूपों का दर्शन

स्तूपों के निर्माण के पीछे दार्शनिक अवधारणा का प्रभाव था। ऋग्वेद में उंची उठती हुई अग्निव्यक्तियों (जैसे- सूर्य की राशि, अग्नि की ज्वाला कितान लेकर फैले वृक्ष) को स्तूप कहा गया है। इसी प्रकार बौद्ध परम्परा में स्तूपों को अनेक का प्रतीक माना गया है। इसके विभिन्न अंग भिन्न-भिन्न दार्शनिक अवधारणाओं से जुड़े हैं जैसे- अण्ड → शान्ति का प्रतीक, हर्मिका - पवित्रता, छत्रावलियां → चारों दिशाओं में बुद्ध की शिक्षाओं का प्रतीक, वेदिका → पवित्र भूमि तथा चारों तीरण → चारों दिशाओं का प्रतीक माने गए हैं।

स्तूपों का उद्भव एवं विकास

स्तूप की चर्चा सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्राप्त होती है। बौद्ध परम्परा (महापरिनिर्वाण सूत) के अनुसार बुद्ध के पूर्व चक्रवर्ती राजाओं एवं संतों के लिए स्तूप बनवाए जाते थे।

अतपथ ब्राह्मण में भी इसकी चर्चा मिलती है। बौद्ध परम्पराओं में इसका विकास बुद्ध की मृत्यु के बाद किया गया जिसे चार चरणों में बाँटकर देखा जा सकता है।



मौर्यपूर्व काल बुद्ध के मृत्यु के तत्काल बाद उनके अनुयायियों द्वारा उनके अवशेषों पर आठ स्थानों पर स्तूपों का निर्माण कराया गया। ये सभी स्तूप साधारण प्रकार के थे, जो वर्तमान में नष्ट प्राय हो चुके हैं।

मौर्यकाल मौर्य काल में अशोक द्वारा 84,000 स्तूपों का निर्माण कराया गया। इसमें साँची भरहुत चौखण्डी (सारनाथ) तथा धर्मराजिका जैसे स्तूप अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। अशोक ने नये स्तूपों के निर्माण के साथ साथ पुराने स्तूपों जैसे कनक मुनी स्तूप (निगालीसागर नेपाल) का निर्माण भी कराया था।

मौर्योत्तर काल स्तूपों के निर्माण की दृष्टि से मौर्योत्तर काल-चरमौत्कर्ष का काल था इस काल के पूर्व एवं इसके बाद वैसा निर्माण नहीं हुआ जैसा कि इस काल में दिखाई देता है।

इस काल में गुप्तों के संरक्षण में साँची तथा भरहुत के स्तूपों के मूल आकार को दो गुने से भी अधिक बड़ा बनाया गया। कुषाण शासकों (विशेषतः कनिष्क) द्वारा

पेशावर मोहनजोदड़ों तक्षशिला आदि स्थानों पर कई स्तूप बनवाए गए। कृष्णा घाटी में इच्छवाकु एवं सातवाहनों के संरक्षण में अमरावती नागार्जुनीकोण्डा, जगमोपेट, जोली व्यण्टशाला आदि स्थानों पर अनेक स्तूपों का निर्माण हुआ।

मौर्यीतर कालीन स्तूपों में स्थापत्य एवं शिल्पकला का भव्यरूप दिखाई देता है। इसकाल के बने शिल्पकला के दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसकाल के स्तूपों के साथ बुद्ध के घटनाओं से जुड़े विषयों जातक कहानियों लोकपण्य विषयों कथाओं (MOTIF) आम जीवन से संबंधित विषयों आदि को शिल्पों के माध्यम से स्तूपों की वैदिकाओं प्रवेश द्वारों पर काफी कलात्मक ढंग से उत्कीर्ण किया गया है।

गुप्तकाल गुप्तकाल में भी स्तूपों के निर्माण की परम्परा जारी रही। इसकाल के प्रमुख स्तूपों में सारनाथ का धर्मचक्र स्तूप, मीरपुर खास का स्तूप (सिन्ध PAK) आदि महत्वपूर्ण हैं। इसकाल में एवं इसके बाद भी स्तूप का निर्माण जारी रहा किन्तु उसकी भव्यता में अब गिरावट आयी।

5. प्रारम्भिक स्तूप बौद्ध दर्शन, लोक विश्वासों (folk Motive) तथा आम जीवन के विषयों का सुन्दर मैलें हैं। चर्चा कीजिए।

अथवा

बौद्ध स्तूप कला (प्रारम्भिक) लोकपण्य विषयों एवं कथानकों को चित्रित करते हुए बौद्ध आदर्शों की सफलतापूर्वक व्याख्या करती है। विशदीकरण कीजिए।

स्तूप स्थापत्य कला मूर्तिकला परम्परा दर्शन एवं लोक विश्वास से जुड़े विषयों की सुन्दर अभिव्यक्ति हैं।

प्रारम्भिक स्तूप समाधि का प्रतीक एक स्थापत्य संरचना होते थे जो विभिन्न अंग-प्रत्यंगों (अण्ड हर्मिका क्षत्रावलियाँ वैदिका तोरण शारध+c) से मिलकर बनते थे स्तूपों के वैदिका एवं तोरण द्वार पर विभिन्न विषयों से जुड़ी मूर्तियों की काफी कलात्मक ढंग से उत्कीर्ण किया जाता था जिसे साँची भरहुत अमरावती में देखा जा सकता है।



स्तूपों के साथ लोक प्रचलित विषयों एवं कथानकों से संबंधित अनेक शिल्प उकेरे जाते थे बुद्ध के जीवन से जुड़ी घटनाओं की हीनयानी एवं महायानी परम्पराओं में वर्णनात्मक ढंग से दिखलाया जाता था।

साँची भरहुत अमरावती में हाथी भस्व पीपल वृक्ष आदि के माध्यम से इसका वर्णन मिलता है बुद्ध के जीवन से संबंधित जातक कथाओं की भी कला के माध्यम से दिखलाया जाता था लोक प्रचलित विषयों जैसे यक्ष-यक्षिणी, बौनो पशु पक्षियों पृथ्वी लताओं 8 नाव सूर्य किन्नर नृत्य संगीत आदि के दृश्यों का भी स्तूपों पर अंकन किया जाता था। भरहुत तथा अमरावती आदि स्तूपों में अनेक ऐतिहासिक घटनाओं, राजाओं राजकुमारियों एवं आम स्त्री-पुरुष को भी उत्कीर्ण किया गया है।

प्रारम्भिक स्वरूपों का निर्माण बौद्ध दर्शन एवं आदर्शों से प्रभावित होकर किया जाता था। स्वरूपों को मृत्यु एवं दुःख का प्रतीक न मानकर पूर्ण आनन्द एवं ज्योति का प्रतीक माना जाता था। इसके विभिन्न भेग प्रत्यंग भिन्न-2 बौद्ध आदर्शों की व्याख्या करते हैं जैसे अण्ड शान्ति का, हर्मिका पवित्रता का, छत्र बुद्ध की शिक्षाओं का, वैदिक पवित्रभूमि का एवं तोरण द्वारा चारों दिशाओं का प्रतीक माना जाता था।

अतः कहा जा सकता है कि प्रारम्भिक स्वरूप कला लोकप्रचलित विषयों कथानकों तथा बौद्ध आदर्शों की सफलता पूर्वक व्याख्या हैं।

स्तूपों का तुलनात्मक अध्ययन

सांची अशोक बौद्ध धर्म प्रसार	भरहुत	अमरावती
1. यह म.प्र. के रायसेन जिले में सांची की पहाड़ी पर स्थित है। यहां कुल तीन स्तूप हैं। Ⓐ महास्तूप - अशोक निर्मित Ⓑ दस बौद्ध भिक्षुओं की याद में बना Ⓒ बुद्ध के शिष्य सारिप पुत्र महामोग्दलायन का स्तूप 2. सांची का स्तूप कलात्मक दृष्टि से काफी भव्य स्तूप है जो आज भी सुरक्षित है यह सर्वांगपूर्ण स्तूप है। (चित्र सहीत विवरण) 3. सांची के स्तूप के तोरण द्वार पर काफी कलात्मक दृष्टि से विविध विषयों के शिल्पों को उकीर्ण किया गया है। <u>अ. हीनयानी शिल्प -</u> इसके तहत बुद्ध के जीवन की घटनाओं से संबंधित विषयों के शिल्प बने हैं जिसे हाथी थोड़ा शेर-चक्र पीपलबृक्ष आदि के द्वारा दर्शाया गया है।	1. यह मध्य प्रदेश के सतना जिले में है। इसका निर्माण मुख्यतः अशोक के द्वारा कराया गया शुंगी के संरक्षण में इसका और विकास हुआ। 2. भरहुत के स्तूप का सम्पूर्ण ढांचा प्राप्त नहीं हुआ है। केवल पूर्वी तोरण द्वार एवं वैदिका का भाग जंगल कनिंघम ने प्राप्त किया था इसके वैदिका पर स्तूप की मूल आकृति बनी है जिसके आधार पर यह माना जाता है कि यह घटा आकृतिक था 3. भरहुत शिल्पकला के विषय, सांची जैसा Ⓐ हीनयानी Ⓑ जातक कथाएं Ⓒ लोक आम विषय के शिल्प	1. यह आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में कृष्णा घाटी में स्थित है इसका निर्माण इक्ष्वाकु एवं सातवाहनों के संरक्षण में किया गया था। 2. यह सांची तथा भरहुत से कई मामलों में अलग है यह संगमरमर से बना है यहां वैदिका तोरण द्वार के साथ-2 अण्ड पर भी शिल्प है। अमरावती में खुला प्रवेश द्वार बना है। जिसमें पांच स्तंभ बने हैं इसे "आयक स्तंभ" कहा जाता है। <u>3. शिल्प कला</u> अमरावती में हीनयानी एवं महायानी दोनों में बौद्ध विषयों के शिल्प बने हैं। हिं हीनयानी के तहत बुद्ध से जुड़े प्रतीकों (हाथी घोड़ा शेर-चक्र) के शिल्प बने हैं जबकि

b. जातक कहानियों के शिल्प

इसके तहत बुद्ध के जीवन से जुड़ी कहानियों के विषयों को शिल्प का रूप दिया गया है जिसमें छंदेय, बैसनार तथा श्याम जातक के चित्र महत्वपूर्ण हैं

c. लोक विषयों के शिल्प

यक्ष-यक्षिणी (शाल-भेजिकाएं) पुष्प खता नृत्य संगीत नाग लक्ष्मी गन्धर्व वtc विषयों का चित्रण है।

4. साँची की मूर्तियां शिल्प कला की अद्भुत उदाहरण हैं। इन्हें रिलिफ चित्र कहते हैं। इसके शिल्पी में त्रिविमीय (3D) का आभास होता है। कलाकारों ने नाप एवं संतुलन का ध्यान रखते हुए काफी विस्तर शिल्पांकन किया है।

महायानी परम्परा के तहत स्वयं बुद्ध की मूर्तियां बनी हैं।

⑥ वैदिकाओं तथा द्वार स्तंभों पर जातक कहानियों के विषयों को भी शिल्प कला में रूढ़ान है।

⑦ यहाँ लोक एवं आम विषयों के शिल्प को काफी महत्व दिया गया है। राजाओं राजकुमारियों महलों तथा आम स्त्री पुरुषों के अत्यंत कलात्मक एवं मनमोहक शिल्प बनाए गए हैं। यहाँ की स्त्री मूर्तियां काफी कलात्मक हैं इन्हें कोमल काया छरहर वदन तथा साज सज्जा के साथ बनाया गया है।

साँची एवं भरहुत में तुलना

समानता के बिंदु

1. दोनों स्तूपों का निर्माण भूलतः अशोक द्वारा करवाया गया था। शुंग शासकों के संरक्षण में दोनों के मूल आकार को और बड़ा बनाते हुए काफी भव्य विकास कराया गया।

2. दोनों स्तूप हीनयानी शाखा के उदाहरण हैं दोनों पर बौद्ध से संबंधित घटनाओं की हीनयानी प्रतीकों एवं जातक कहानियों से संबंधित विषयों के शिल्प काफी कलात्मक ढंग से बने हैं।
3. दोनों ही स्तूपों पर लोक जीवन से संबंधित विषयों-अपसराओं नाग, किन्नर, गन्धर्व, लक्ष्मी जानवर पुष्प खताए आदि से संबंधित शिल्प बने हैं।
4. दोनों बलुआ पत्थर से निर्मित हैं।

असमानता के विद्यु

1. साँची का स्तूप अर्धगोलाकार एवं सर्वांगपूर्ण स्तूप है एवं वर्तमान में भी पूर्ण सुरक्षित है भरहुत का स्तूप वर्तमान में नष्ट प्राय हो चुका है इसकी मूल आकृति को दृष्टाकृति के रूप में माना जाता है।
2. साँची की वेदिका सादी है इसपर कोई अलंकरण नहीं है। भरहुत में वेदिका के साथ-2 तौरण द्वार पर शिल्पांकन किया गया है।
3. मूर्तिकला की दृष्टि से साँची की मूर्तियाँ भरहुत से अधिक अच्छी हैं साँची की मूर्तियाँ रिलिफ चित्र के वर्ग में आती हैं इन मूर्तियों में 30 का आभास होता है जबकि भरहुत में ऐसा नहीं है।

Q.-: साँची की मूर्तियाँ भरहुत से अधिक कलात्मक एवं श्रेष्ठ हैं विवेचना कीजिए।

Ans साँची एवं भरहुत के स्तूप बौद्ध परम्परा के उत्कृष्ट स्तूपों में से एक हैं इन स्तूपों में स्थापत्य कला के साथ-2 मूर्तिकला का भी ब्रह्म प्रस्तुतीकरण है दोनों के शिल्पों के विषय समान होते भी शिल्पकला में भिन्नता है साँची का शिल्प भरहुत की तुलना में कलात्मक एवं श्रेष्ठ है।

सांची के स्तूपों पर बनी हीनयानी परम्परा के प्रतीकों जैसे हाथी, घोड़ा, पीपल शेर चक्र आदि को बहुत ही कलात्मक ढंग से उकेरा गया है इसके तकनीकी को बहुत ही बेहतर ढंग से दिखाया गया है।

सांची तथा भरहुत दोनों स्थानों पर अशोक तथा गुप्त शासकों के संरक्षण में भव्य स्तूपों का निर्माण हुआ दोनों ही स्तूपों पर बुद्ध के जीवन से जुड़ी घटनाओं जातक कहानियों तथा लोक विश्वासों से संबंधित अनेक शिल्प उत्कीर्ण किए गए हैं लेकिन तकनीकी दक्षता

के बिंदू एवं बनावट के अन्तर पर दोनों में अन्तर है। सांची के शिल्प 3D शिल्प एवं रिलिफ चित्रण की श्रेणी में होते हैं जिसकी तकनीकी भरहुत से अधिक उन्नत है।

दोनों ही स्तूपों के तोरण द्वारों तथा वेदिकाओं (केवल भरहुत) पर हीनयानी परम्परा के विभिन्न प्रतीकों अश्व, हाथी शेर, बोधिवृक्ष चक्र आदि के शिल्प जातक कथाओं तथा आम लोकविषयों से संबंधित शिल्प यक्ष-यक्षिणी नाग, लक्ष्मी पुष्प खता जानवर आदि बने हैं। लेकिन भरहुत की अपेक्षा सांची की मूर्तियों में उभार पक्ष ज्यादा बेहतर है इसका त्रिविमीय है। सामानिक उत्सवों स्त्रीयों की साज सज्जा भेष भूसा आदि का शिल्पांकन सांची में काफी बारीकी से किया गया है। सांची के शिल्प इतने बारीक एवं तकनीकी रूप से दक्ष हैं कि पत्थरों में दूर से वंशी वीणा तथा डोल जैसे वाद्ययंत्रों को आसानी से पहचाना जा सकता है सांची में बने जानवर पुष्प यक्ष यक्षिणी की मूर्तियां भरहुत से अधिक अच्छी हैं।

सांची के चित्रों में डिस्टेंस डायमेंसन को तोड़ गया है एवं मूर्तियों को 3D रूप दिया गया है यहाँ के शिल्प दूर से ही स्पष्ट दंग से दिखाई देते हैं जबकि भरहुत में ऐसा नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि सांची के शिल्प मूर्तिकला में भरहुत से अधिक श्रेष्ठ हैं।

प्रश्न - स्तूप स्थापत्य से आप क्या समझते हैं इसके प्रमुख लक्षणों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न - 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व से आगे स्तूपों के विकास का निरूपण कीजिए।

अथवा

प्रश्न - स्तूपों के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए

प्रश्न - स्तूप कला बौद्ध दर्शन, लोकण्य विषय एवं कथानकों की अभिव्यक्ति है। विवेचना कीजिए।

प्रश्न - सांची के स्तूप एवं शिल्प कला की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

प्रश्न - भरहुत स्तूप के कलात्मक लक्षणों की चर्चा कीजिए

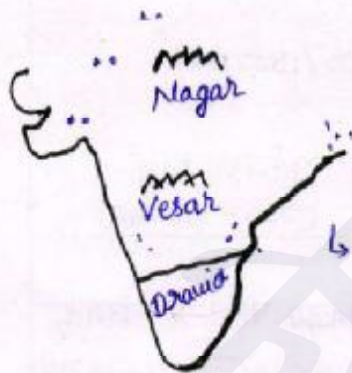
प्रश्न - सांची एवं भरहुत के स्तूपों में तुलना कीजिए

प्रश्न - अरावती स्तूप पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए

प्रश्न - सांची की मूर्तिकला - भरहुत की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है। विवेचना कीजिए।

मंदिर स्थापत्य

- ↳ संकल्पना एवं दर्शन
 - ↳ उद्भव एवं विकास
 - ↳ विकास के कारण
 - ↳ मंदिरों की भूमिका
 - ↳ मंदिरों की शैलियाँ → नागर
→ द्रविड़ (द्रविड)
→ वैस्य
- } तुलनात्मक
अध्ययन



मंदिर, देवालय

- ↳ देवी/देवता का निवास स्थान
- कलाओं का संगम - वास्तु, मूर्ति, चित्र, नृत्य संगीत

दार्शनिक पक्ष

- ↳ पृथ्वी एवं अंतरिक्ष के बीच गति एवं समय के परिचायक माने जाते हैं।
- ↳ माना जाता है कि मंदिर ब्रह्माण्डीय संसार के धरातल पर प्रकटीकरण है।
- ↳ शिल्प शास्त्रों के ग्रंथों (भयमत, मानसा, भयराजितपूजा आदि) में मंदिर की संकल्पना वास्तुपुरुष के रूप में की गई है। माना जाता है कि जिस प्रकार मानव शरीर सिर से पाव तक बसा है उसी प्रकार मंदिर ब्रह्म के शरीर का प्रकटीकरण है।



→ उद्भव एवं विकास (100 BC - 1700/1800 AD)

नागर - मौर्योत्तर → गुप्तकाल → पूर्वमध्यकाल
(100 BC - 300 AD) (319 - 550 AD) (700 - 1200 AD)

द्विविदु - पल्लव → चोल → विजयनगर → नायक
(7-9 सदी) (9-13 सदी) (14-16 सदी) (17-18 सदी)

बैसर - पं. चालुक्य → राष्ट्रकूट → होयसल
(7-9 सदी) (10-12 सदी) (13-14 सदी)

→ कारण

हजारों वर्षों के दौरान हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक भारत में सैकड़ों मंदिरों का निर्माण हुआ। अधिकांश मंदिर पूर्वमध्यकाल (700-1200 AD) में बनाए गए। हालांकि इनकी नींव मौर्योत्तर काल में पड़ चुकी थी। मंदिर निर्माण के अनेक कारण थे। जैसे -

धार्मिक/दार्शनिक कारण

मंदिर निर्माण के पीछे भावार्ति विचारधारा का महत्वपूर्ण योगदान था। जिसका उद्देश्य 100 ई० पू० के आसपास मौर्योत्तर काल में हुआ। भावार्ति के उद्भव के कारण देवी/देवताओं की भूतियों एवं उनके आश्रय की आवश्यकता महशूस की गई फलतः मंदिर निर्माण की बल मिला।

मंदिरों के निर्माण के पीछे पुण्य कर्म की भावना का भी योगदान था। पुराणों में मंदिर निर्माण को पुण्य कर्म घोषित किया गया इसे धर्म कहा गया है।

राजनीतिक कारण

मंदिर निर्माण के पीछे राजनीतिक कारणों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी पूर्वमध्यकाल में भारतीय राजनीति में अनेक राजनीतिक वंशों (चंदेल, चौहान, प्रतिहार, गहड़वाल) का उद्भव हुआ। इनमें से अधिकोश ने नई-नई सत्ता स्थापित की थी। अधिकोश राज्यों द्वारा जनता के बीच अपनी सत्ता की स्वीकारोक्ती, राजनीतिक वैभव एवं प्रसिद्धी भर्जित करने के उद्देश्य से सैकड़ों की संख्या में भव्य एवं विशाल मंदिरों का निर्माण कराया गया।

आर्थिक कारण

पूर्वमध्यकाल में सामन्तों की बड़ी मात्रा में भूमि अनुदान दिया गया। ये सामन्त विभासी जीवन एवं भव्य संरचनाओं के निर्माण में काफी रुची रखते थे। दिखावे में विश्वास करते थे। अतः उन्होंने मंदिरों के निर्माण में विशेष रुची ली।

प्रायोगिकीय कारण

मौर्यकाल से ही भारत में तक्षण कला (पत्थरों को काटने एवं तराशने) की तकनीकी का काफी विकास हो चुका था अतः इसने भी मंदिर निर्माण को प्रेरित किया।

→ मंदिरों की भूमिका

भारतीय जनजीवन में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक मंदिर बहुआयामी भूमिका निभाते रहे हैं परम्परागत भारतीय जीवन में मंदिरों की अनेक भूमिकाएँ थी। जो निम्न हैं।

राजनीतिक मंदिर राजनीतिक एवं प्रशासनिक शक्ति के प्रतीक होते थे मंदिरों को शासकों द्वारा बड़े-2 भुज्जुड अनुदान के रूप में दिए जाते थे मंदिरों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक अधिकार, भूराजत्व वसूली न्यायिक अधिकार भी दिए जाते थे अतः मंदिर स्थानीय विवादों का निपटारा करते थे। किसानों शिल्पीयों एवं मजदूरों की मंदिरों के आदेश का पालन करना पड़ता था। मंदिर राजाओं एवं सामन्तों की तथा सामंत एवं शासक मंदिरों की समर्थन देते थे।

सामाजिक मंदिरों के कारण समाज के ब्राह्मण-पुजारी वर्ग के वर्चस्व में वृद्धि हुई। मंदिर अनेक अधिकारियों, वास्तुकार, शिल्पकार, नौकर-चाकर आदि को रोजगार प्रदान करते थे मंदिरों के कारण ही देवदासी जैसी सामाजिक प्रथा का उद्भव हुआ। प्राकृतिक आपदा की स्थिति में मंदिर राहत कार्य पहुँचाते थे। इस प्रकार समाज में उनकी एक प्रभावी भूमिका थी।

आर्थिक मंदिर वित्तिय एवं आर्थिक भूमिका का भी निर्वहन करते थे। मंदिरों द्वारा लोगों की व्याज पर पैसों दिए जाते थे। इससे अनेक उद्योगों रोजगार एवं व्यवसाय की बल मिलता था। मंदिरों ने नगरीकरण को बढ़ावा दिया। अनेक मंदिर तीर्थस्थल के रूप में विकसित हुए। उनके आसपास बाजारों एवं सरायों का निर्माण होता गया। जिससे शहरीकरण को बढ़ावा मिला।

मंदिरों ने सिंचाई के साधनों कुआ, तालाब आदि का निर्माण कराया। इससे कृषि के विकास को बढ़ावा मिला।

सांस्कृतिक भारतीय सांस्कृतिक जीवन में हमेशा से मंदिरों की विशेष भूमिका रही है। मंदिरों में शिक्षा कला नृत्य - संगीत आदि के विकास में काफी योगदान दिया। भारत की शास्त्रीय नृत्य कलाएं (मोहिनी भट्टम ओडिसी कुचीपुडी - कथकली आदि) तथा संगीत के विकास में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। देवदासियों ने काफी तपस्या एवं साधना द्वारा इन कलाओं के विकास को बढ़ावा दिया।

शैक्षिक प्राचीन भारत में शिक्षा के विकास में भी मंदिरों की महत्वपूर्ण भूमिका थी ऐसे मंदिर जो शिक्षा प्रदान करने से जुड़े थे उन्हें प्दष्टिका कहा जाता था।

मंदिरों के तहत वैदिक दर्शन - पूर्व मिमांस, गणित व्याकरण तर्कशास्त्र - सांस्कृत आदि की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा देने के लिए मंदिर से स्थान अनेक शिक्षकों / माचार्यों को नियुक्त करते थे।

मंदिरों द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का भरण-पोषण किया जाता था।

लेकिन मंदिरों के तहत दी जाने वाली शिक्षा की कुछ सीमाएं भी थी। अधिकांश मंदिरों में बूढ़ों एवं महिलाओं की प्रवेश नहीं था। मंदिर संस्थान प्रायः में तीनों उच्च वर्ण के विद्यार्थियों की शिक्षा देते थे लेकिन बाद में मंदिरों की शिक्षा प्रणाली केवल ब्राह्मणों के हाथ तक सिमट गयी। इनका अध्ययन क्षेत्र भी सीमित था क्योंकि इनमें मुख्यतः हिंदू धर्म दर्शन की शिक्षा दी जाती थी तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल था। फिर भी जिस समय शिक्षा प्रदान करने की अनेक सीमाएं थी। स्कूल कालेजों का अत्यन्त अभाव था वैसे में मंदिरों की शैक्षिक भूमिका प्रशंसनीय है।

प्रश्न:- प्राचीन भारतीय जनजीवन में मंदिरों की भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

Ans Intro — 2. 3 line

Body of ans - सामा. राज. आर्थि. सांस्कृतिक, शैक्षिक

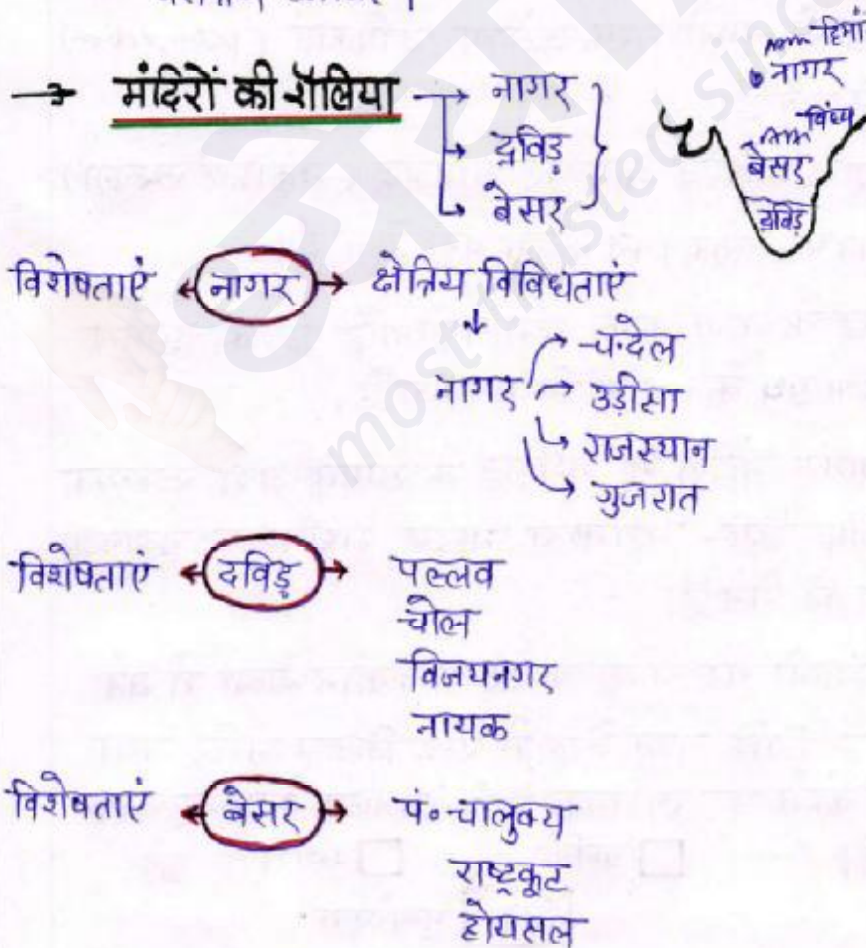
आलोचनात्मक पक्ष - मंदिरों की भूमिका की कई सीमाएं

भी थी जैसे कई बार इनके द्वारा कई कर वसूले जाते थे। इनकी व्याजदरे भी ऊंची थी अनेक मंदिर बूढ़ों एवं महिलाओं की प्रवेश से वंचित करते थे मंदिर सभी वर्गों को समान शिक्षा नहीं देते थे। ऐसे मामलों में जाति एवं लिंग संबंधी भेदभाव को बढ़ावा मिलता था। कई बार कुछ पुजारियों द्वारा देवदासियों का शारीरिक एवं मानसिक शोषण किया गया।

मूल्यांकन - कुछ सीमाओं के बावजूद मंदिरों की काफी सकारात्मक भूमिका थी। आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास में मंदिरों ने अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया अधिकतम: मंदिर भारतीयों की सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा देते थे। यही कारण है कि आज भी भारतीयों के जीवन में मंदिर अद्वा के केंद्र बने हुए हैं।

प्रश्न - प्राचीन भारत में मंदिरों की शैक्षिक भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न - आर्थिक एवं वित्तीय क्षेत्र में परंपरागत भारतीय जीवन क्षेत्र में मंदिरों द्वारा निर्वहन की गई भूमिका का परीक्षण कीजिए।



— मंदिरों की नागर शैली - स्थापत्य एवं लक्षण

विशेषताएं

1. उत्तर भारत में हिमालय से किष्क के मध्य नागर मंदिर बनाए जाते हैं।
2. नागर मंदिरों का निर्माण ऊँचे चबूतरे या भविष्य (जगती) पर किया जाता है।
3. इन मंदिरों का गर्भगृह वर्गाकार होता है गर्भगृह के ऊपर बना शिखर रेखा / आर्य शिखर कहलाता है। शिखर को गर्भगृह से ऊपर की तरफ वक्राकार ढंग से खिंचा जाता है। तथा उसकी ऊँचाई बढ़ाई जाती है। इसके लिए गर्भगृह से चारों तरफ प्रक्षेपण / रश्मिकाएं (projection) निकाले जाते हैं।
4. शिखर के सर्वोच्च भाग पर भाभलक (चक्राकार संरचना) (गति का परिचायक) एवं कलश बना होता है।
5. गर्भगृह के चारों तरफ अंतराल होता है जिसका प्रयोग प्रदक्षिणा पथ के रूप में किया जाता है।
6. बड़े नागर मंदिरों में गर्भगृह के सामने मध्य सहायक संरचनाएं जैसे - महामण्डप, मण्डप, मध्यमण्डप, नृत्यमंडप आदि बने होते हैं।
7. कुछ स्थानों पर नागर मंदिर पंचायतन शैली में बने होते हैं जिसके तहत केंद्र में एक विशाल मंदिर तथा चारों कोनों पर सहायक देवी-देवताओं के मंदिर बनाए जाते हैं।

☐ पार्वती

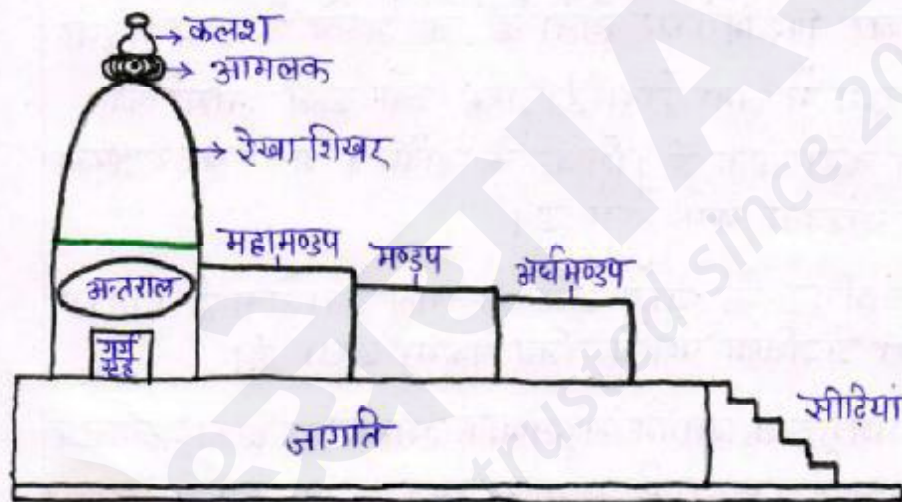
☐ गणेश

☒ शिव ☐ भुव्यदेवता

☐ सूर्य

☐ विष्णु

8. नागर मंदिरों के बाहरी भागों में आले (ताखा) काटकर अनेक प्रकार की मूर्तियों से इहे सजाया जाता है। इन मूर्तियों में अनेक देवी देवताओं, लोकविषयों से संबंधित (नाग, अप्सरा, मिथुन नृत्य संगीत) भाष स्त्री-पुरुष की मूर्तियां बनी होती हैं। जिन्हें उत्तर प्रदेश के देवगढ़ कंदरिया महादेव, खजुराहों भुवनेश्वर भादि मंदिरों में देखा जा सकता है।



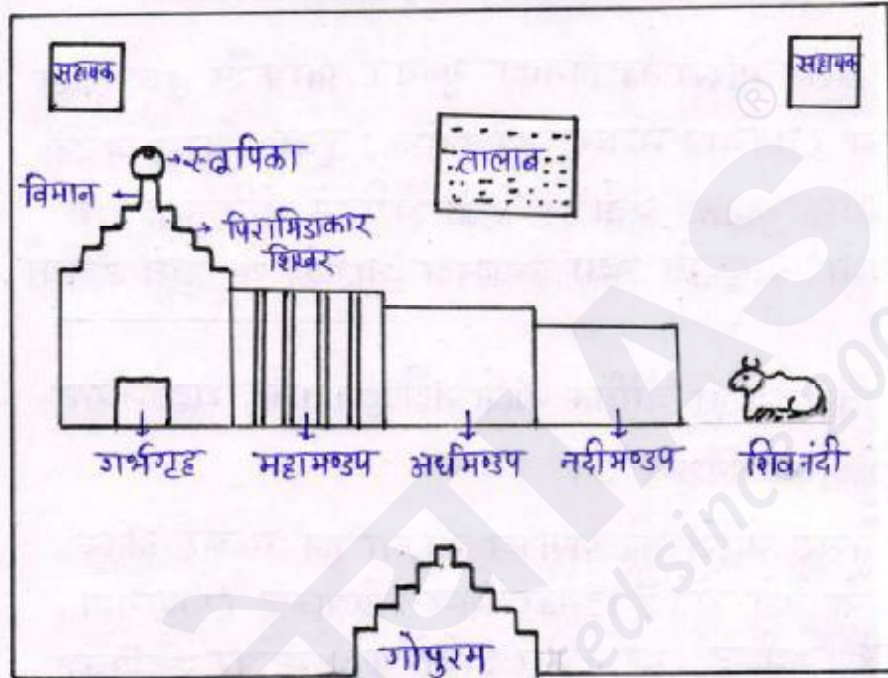
1. दशावतार मंदिर - देवगढ़ (U.P.) - विष्णु
2. कंदरिया महादेव - खजुराहों (M.P.) - शिव
3. लक्ष्मण मंदिर - खजुराहों (M.P.) - विष्णु
4. लिंगराज मंदिर - भुवनेश्वर - शिव
5. अरसावली मंदिर - आन्ध्रप्रदेश - सूर्य

9. मंदिरों की नगर शैली से आप क्या समझते हैं? सचित्र वर्णन कीलिए।
10. मंदिरों के पंचायतन शैली से क्या आशय है? भारत के कुछ प्रमुख पंचायतन मंदिरों का उदाहरण देते हुए समझाइए।

⇒ मंदिरों की द्रविड़ शैली

1. द्रविड़ शैली के मंदिरों का विकास मुख्य रूप से कृष्णा नदी से कन्याकुमारी के बीच वर्तमान तमिलनाडु, केरल निचला माध्य प्रदेश आदि के मध्य हुआ है।
2. द्रविड़ मंदिरों में ऊचा चबूतरा नहीं होता है। यह मंदिर धरातल के नीचले हिस्से से बना प्रारम्भ होता है।
3. द्रविड़ मंदिरों का गर्भगृह वर्गाकार एवं इसके ऊपर का शिखर पिरामिडाकार होता है जो तल्ले के ऊपर तल्ला घटते क्रम में बना होता है। इसके ऊँचे उठते भाग को विमान कहा जाता है। शिखर के सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका नामक संरचना बनी होती है।
4. गर्भगृह के चारों ओर अंतराल बना होता है जिसका प्रयोग प्रदक्षिणा पथ के लिए किया जाता है।
5. गर्भगृह के सामने बहुसंख्यक स्तम्भों पर टिका महामण्डप बना होता है। साथ ही अन्य सहायक रचनाएँ जैसे - अर्धमण्डप एवं नक्षीमण्डप आदि बने होते हैं।
6. द्रविड़ मंदिर चारद्वारों के भीतर बने होते हैं। मंदिर प्रांगण में तालाब बना होता है। प्रांगण के भीतर सहायक मंदिर (देवी-देवता एवं राजा रानियों) भी बने होते हैं।
7. द्रविड़ मंदिरों का प्रवेश द्वार काफी भव्य एवं विशाल होता है। जिसे गोपुरम कहा जाता है।
8. मंदिरों के बाहरी भागों पर मण्डपों से लेकर शिखर तक देवी-देवताओं की मूर्तियों एवं लोक विषयों से संबंधित मूर्तियों का अद्भुत शिल्पांकन किया जाता है।

कुछ मंदिरों जैसे - बृहदेश्वर एवं गिनाशी मंदिरों के भीतर बरामदे में देवी-देवताओं एवं अन्य विषयों के चित्रण भी प्राप्त होते हैं।



नागर एवं ड्रविड़ मंदिरों में अंतर

नागर

1. रेखीय शिखर
2. शिखर के सर्वोच्च भाग पर आमलक तथा कलश जैसी संस्कार
3. सामान्यतः ऊँचा चबूतरा पर बना होता है। (जागीर)
4. चहारदिवारी तथा प्रांगण के भीतर तालाब निर्माण आवश्यक नहीं है।
5. भव्य प्रवेश द्वार सामान्यतः नहीं बने होते हैं।

ड्रविड़

1. पिरामिडाकार शिखर
2. सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका बनी होती है।
3. उँचा चबूतरा आवश्यक नहीं सामान्यतः धरातल से ही बनने प्रारम्भ हो जाते हैं।
4. चहारदिवारी निर्माण तथा प्रांगण में तालाब यहां की मुख्य विशेषता है।
5. भव्य प्रवेश द्वार (गोपुरम) यहां के विशेष परम्परा है।

6. वास्तुशास्त्र की भाषा में
इहें "प्रसाद" कहा जाता है।

6. इहें वास्तुशास्त्र में
विमान कहा जाता है।

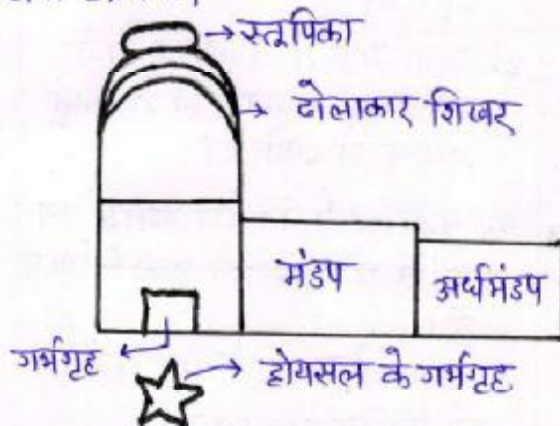
बेसर शैली के मंदिर एवं उनकी विशेषताएं

1. बेसर मंदिरों का निर्माण मुख्यतः विष्णु से कृष्णाक्षरी के बीच (वर्तमान महाराष्ट्र एवं कर्नाटक) हुआ। बेसर मंदिरों का विकास मुख्यतः 7वीं से 13वीं सदी के बीच पश्चिमी चालुक्यों, राष्ट्रकूटों तथा होयसल शासकों के द्वारा कराया गया।

2. बेसर शैली मौलिक शैली नहीं है। वाक्कि चट्ट नागर एवं इविण का मिश्रण है।

3. बेसर मंदिरों की धरातल योजना एवं आकार इविड़ मंदिरों जैसे होते हैं। इसका शिखर ढोलाकार (पीपानुमा) होता है। गर्भगृह, मंडप एवं सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका आदि इविड़ मंदिरों जैसे आदि बने होते हैं। लेकिन अलंकरण एवं सजावट नागर मंदिरों जैसा होते हैं।

4. अधिकांश बेसर मंदिरों का गर्भगृह त्रिकोण होता है। लेकिन इसके अपवाद भी मिलते हैं। जैसे होयसल शासकों के तहत बने मंदिर का गर्भगृह बहुकोणीय (तारा आकृति) बना होता है।



→ नागर मंदिरों की क्षेत्रीय विविधता



नागर शैली के मंदिरों का निर्माण मुख्य रूप से उत्तर भारत में हुआ है। लेकिन उत्तर भारत के मंदिरों में कुछ क्षेत्रीय विविधता एवं अंतर भी मिलता है।

• खजुराहों मंदिर समूह

- | | |
|--|---|
| <p>जैन धर्म</p> <p>↓</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. पार्श्वनाथ का मंदिर 2. शान्तिनाथ का मंदिर | <p>हिंदू धर्म</p> <p>↓</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. वैष्णव मंदिर <ul style="list-style-type: none"> ↳ चतुर्भुज ↳ लक्ष्मण ↳ बराह 2. शैव मंदिर <ul style="list-style-type: none"> ↳ कंदरिया महादेव ↳ विश्वनाथ मंदिर 3. देवी / साक्त मंदिर <ul style="list-style-type: none"> ↳ चौंसठ योगिनी ↳ जगदम्बा |
|--|---|
- 
 → खजुराहों न० मंदिर
- निर्माण - चंदेलों, कच्छवाहा राजपूत शासकों द्वारा कराया गया
 - अनेक देवी देवताओं के मंदिर बने हैं मुख्यतः दो धर्म से।

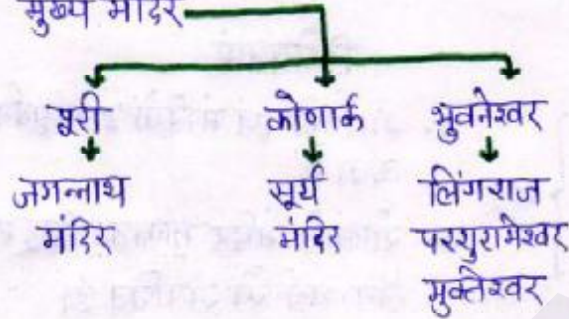
विशेषताएं

1. इन मंदिरों का निर्माण चंदेल एवं कच्छवाहा शासकों के तहत मुख्यतः पूर्वी मध्यकाल के बीच हुआ। यहाँ जैन एवं हिंदू धर्म के बहुसंख्यक मंदिर बनाए गए।

2. इनका निर्माण स्थानीय सामग्रियों से किया गया है। अधिकांश मंदिर पत्ता खान से निकाले गये दलके गुलाबी क्लुम्मा पत्थर से किए गए हैं।
3. यह मंदिर नागर शैली के तहत बने मंदिर हैं।
4. मुख्य मंदिरों के नाम
5. खजुराहो मंदिरों की एक स्त्री-पुरुष विशेषता है। यहाँ के मंदिरों के शिखर ऊँची उठती हुई पहाड़ियों के अनुकरण में बनाए गये हैं। मंदिरों के साथ छोटे-2 बहुसंख्यक शिखर बने हैं। जो पहाड़ी श्रृंखला का भाग माने जाते हैं। इन्हें उखल्लंग शिखर कहते हैं।
6. खजुराहो के मंदिर अपने विशाल एवं भव्य स्थापत्य निर्माण के साथ-साथ सुंदर एवं आकर्षक शिल्पांकन के लिए भी जाने जाते हैं। मंदिरों के बाहरी भागों एवं दिवारों पर भारी संख्या में अनेक कलात्मक एवं खूबशूरत मूर्तियों का निर्माण किया गया है। इन मूर्तियों में देवी-देवता, देवकन्याएं, गन्धर्व, अप्सराएं, मिथुन तथा सामान्य स्त्री-पुरुष की मूर्तियां नृत्य, संगीत एवं कामक्रीड़ा की मुद्राएं बनी हैं। यहाँ की मूर्तियां आध्यात्म के साथ-2 भौतिकता की भी प्रदर्शित करती हैं।

• उड़ीसा / कलिंग शैली

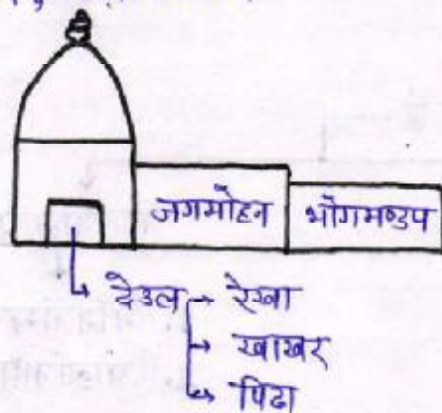
- निर्माण स्थानीय गंग शासकों के तहत पूर्वमध्यकाल में हुआ।
- मुख्य मंदिर



तीन मुख्य केंद्र
• पूरी
• भुवनेश्वर
• कोणार्क
प्रत्येक केंद्र पर दर्जनों मंदिर

विशेषताएँ

1. उड़ीसा के मंदिर पूर्वमध्यकाल में गंग शासकों के संरक्षण में मुख्यतः तीन केंद्रों - पूरी, कोणार्क, भुवनेश्वर में बने हैं।
2. उड़ीसा के मंदिरों का निर्माण स्थानीय रूप से उपलब्ध ग्रेनाइट तथा स्लेटी पत्थरों द्वारा किया गया है।
3. मुख्यतः नागर शैली के बने मंदिर हैं।
4. उड़ीसा के मंदिरों के विभिन्न संरचनाओं के स्थानीय नाम मिलते हैं यहां गर्भगृह को देउल, गर्भगृह के सामने के मण्डप को **जगमोहन** तथा उसके सामने के मण्डप को भोगमण्डप कहा जाता है। देउल के भी कई प्रकार-रेखा, खाखर, पिढा होते हैं।



• चालुक्य / सोलंकी मंदिर (गुजरात)

चालुक्यों द्वारा यहाँ पूर्व मध्यकाल में अनेक मंदिरों का निर्माण कराया गया

मुख्य मंदिर

1. सोमनाथ का मंदिर
 2. रुद्रमल का मंदिर
 3. माहिलवाड़ मंदिर
 4. मोदेरा का सूर्यमंदिर
- } हिंदू
5. आदिनाथ मंदिर
 6. पार्श्वनाथ मंदिर
- } जैन

विशेषताएं

1. शासकों एवं मंत्रियों द्वारा पूर्वमध्यकाल में
2. सोलंकी मंदिर मुख्यतः हिंदू एवं जैन धर्म से संबंधित हैं।
3. गुजरात के सोलंकी मंदिरों की जागती भाषाताकार न होकर गोलकार बना होता है।
4. यहां के मंदिरों के मंडपों में भारी संख्या में स्तम्भों का प्रयोग किया गया है।
5. नागर शैली की सभी विशेषताएं
6. यहां शिखर को स्थानीय भाषा में मंडोहा या मंडोवर कहा जाता है।

• राजस्थान के मंदिर

1. पूर्वमध्यकाल में चालुक्य सोलंकी शासकों द्वारा बहुसंख्यक मंदिरों का निर्माण
2. यहां के मंदिर समूह हैं

माउण्ट आबू समूह

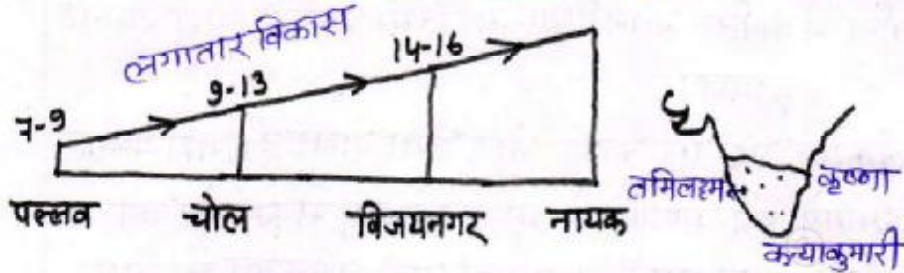
1. आदिनाथ मंदिर
2. पार्श्वनाथ मंदिर

दिलवाड़ा समूह

1. नेमितांग
2. पार्श्वनाथ

3. नागर शैली की विशेषताओं के तहत बने हैं।
4. निर्माण स्थानीय सामग्रियों से किया गया है। यहां संगमर-
मर का बहुतायत।
5. अलंकरण पक्ष पर काफी जोर दिया गया है। यहां गर्भगृह
के सामने बने मण्डपों में भारी संख्या में स्तंभों का
निर्माण किया गया है। सजावट एवं अलंकरण के लिए
किमती पत्थरों का जड़ा गया है। मंदिरों के दृढ़ भी काफी
अलंकृत हैं। जिस प्रकार सोने के आभूषणों में बारीक
कारीगरी की जाती है। उसी प्रकार यहां कलाकारों ने
बारीकी दिखाई है।

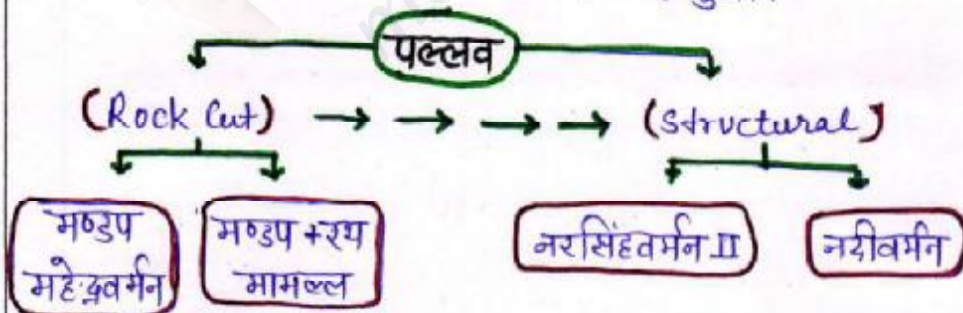
द्रविड़ शैली के मंदिर



उद्भव एवं विकास

• पल्लव मंदिर (५-९ सदी)

- ↳ कई पल्लव शासकों ने मंदिर निर्माण में महान योगदान दिया।
- ↳ चार चरणों में मंदिर विकसित हुए।
 - महेंद्रवर्मन
 - नरसिंहवर्मन I / भामल्ल शैली
 - नरसिंहवर्मन II / राजसिंह शैली
 - नदीवर्मन शैली
- ↳ मंदिरों का विकास दो रूप में शैलिकृत (Rock Cut) से संरचनात्मक (Structural) की तरफ हुआ।



द्रविड़ वास्तुकला का उद्भव एवं विकास सर्वप्रथम पल्लवों के काल में हुआ जिसे आगे चोलों, विजयनगर के शासकों तथा नायकों ने और ऊँचाईयों पर पहुँचाया।

पल्लवों के काल में सर्वप्रथम पहाड़ियों को काटकर शैलकृत मंदिरों का निर्माण हुआ (मण्डप एवं रथ के रूप में) नरसिंह वर्मन II (राजसिंह) के समय पहली बार संरचनात्मक मंदिर बनाए गए। भागों के कालखण्डों में मुख्यतः यही बने।

1. महेन्द्रवर्मन शैली (मण्डप) →



- यह सबसे प्रारंभिक शैली थी, जिसे मण्डप कहा जाता है। इसके तहत पहाड़ी को सामने की तरफ से काटकर पिछले भाग में साधारण कक्ष (गर्भगृह) एवं बरामदा का निर्माण किया गया।
- गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर द्वारपालों की मूर्तियां तथा अनेक स्तम्भ बनाए गए।
- इसके तहत कई मण्डपों का निर्माण किया गया जिसमें त्रिमूर्ति मंडप (भडगपट्टू) पंचपांडव मंडप (पल्लवरत्न) तथा महेन्द्र विष्णु मंडप (महेन्द्रताणी) आदि मुख्य हैं।

2. नरसिंहवर्मन I / मामल्ल शैली (मण्डप + रथ)

यह भी शैलकृत मंदिरों की शैली है। इसके तहत मण्डपों के साथ-2 रथों का निर्माण किया गया।



- इस काल में रथों का निर्माण पहाड़ी को ऊपर से नीचे की तरफ काटकर किया गया है। ये रथों के अनुकरण में बने हैं। इनपर वीर्य, चैत्यों एवं विद्यारों का भी प्रभाव है।

- b. सभी रथ एक समान नहीं हैं बल्कि ये कई मंजिलों में प्राप्त होते हैं रथों के सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका बनी होती है।
- c. सभी रथ मंदिर महावलीपुरम में बने हैं। इनकी संख्या सात है इसे सप्त पैगोडा भी कहते हैं।
1. युधिष्ठीर रथ (सभी में बड़ा)
 2. भीम रथ
 3. भर्तृहरि रथ
 4. नकुल / सहदेव रथ
 5. द्रौपदी रथ
 6. गणेश रथ
 7. पिंडारी / वल्यकुडी रथ
- d. रथ केवल स्थापत्य के ही उदाहरण नहीं हैं बल्कि ये शिल्प कला के भी उत्तम प्रदर्शन हैं। इनके बाहरी भागों पर रामायण, महाभारत तथा पौराणिक कथाओं - गंगावहण भर्तृहरि की तपस्या, शिव की किरात कथा, राम का वनवास भाई की विभिन्न खूबसूरत शिल्पों के माध्यम से दिखलाया गया है। यहां हाथी जैसे जानवरों के सुंदर शिल्प बने हैं।

3. नरसिंहवर्मन-II / राजसिंह शैली

इसकाल में पल्लवों ने शैलकृत तकनीकी का परित्याग कर दिया। यहां से संरचनात्मक मंदिर बनाये जाने लगे। जिनका निर्माण खुले धरातल पर ईंटों एवं पत्थरों पर किया गया।

राजसिंह शैली की संरचनात्मक मंदिरों की विशेषताएं निम्न हैं।

- वर्गाकार गर्भगृह
- गर्भगृह के उपर पिरामिडाकार शिखर
- सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका
- गर्भगृह के चारों तरफ अंतराल
- सामने की तरफ भण्डपों का निर्माण
- मंदिरों के चारों तरफ चहारदिवारी एवं प्रवेश द्वार पर गोपुरम का निर्माण
- इसके तहत - महावलिपुरम का शोर मंदिर (शिव)
कांची का कैलाशनाथ मंदिर एवं बैकुण्ठपेरुमल मंदिर

4. नंदीवर्मन शैली

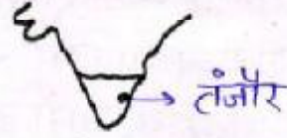
राजसिंह शैली की भाँति यह भी मंदिरों की संरचनात्मक शैली है। जिसकी विशेषताएं राजसिंह शैली की भाँति हैं। इसके तहत - कांची का भुक्तेश्वर मंदिर तथा गुडीमंगलम का परशुरामेश्वर मंदिर आदि आते हैं।

- ९. पल्लव स्थापत्य एवं शिल्पकला की चर्चा कीजिए।
- ९. समझाइए कि किस प्रकार पल्लवों के तहत द्रविड़ वास्तुकला का विकास शैलकृत से होते हुए संरचनात्मक की तरफ हुआ।



चोल मंदिर (9-13 सदी)

- ७ बौलीगत विशेषता
- ७ मुख्य मंदिर
- ७ विशेष लक्षण



- पल्लवों को पराजित कर सत्ता में आए।
- चोलों ने पल्लवों द्वारा प्रारम्भ डक्कि शैली को जारी रखा तथा ४ उसी और उचाईयों पर पहुँचाया
- चोलों के काल में अत्यन्त भव्य एवं विशाल मंदिर बने। मंदिरों के साथ अत्यन्त कलात्मक एवं खूबसूरत मूर्तियों का निर्माण हुआ कुछ की दिवारों पर चित्रण भी किया गया।

चोल मंदिरों की विशेषताएं

- वर्गाकार गर्भगृह, गर्भगृह के ऊपर तल्ले दर तल्ला घटते क्रम में पिरामिडाकार शिखर।
- सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका, गर्भगृह के चारों ओर अन्तराल, गर्भगृह के सामने महामंडप, अर्धमंडप तथा नक्षीमंडप जैसी संरचनाओं का निर्माण।
- चहारदिवारी, प्राणण में तालाब एवं सहायक मंदिर देवी-देवता एवं राजारानी के।
- दो-दो भव्य गोपुरम् का निर्माण
- प्रमुख मंदिरों में - नर्तमलई मंदिर, तंजौर का वृहदेश्वर / राजराजेश्वर, गंगईकोण्डचोलपुरम का मंदिर, सरावतेश्वर एवं केपहरेस्वर मंदिर आदि मुख्य हैं।

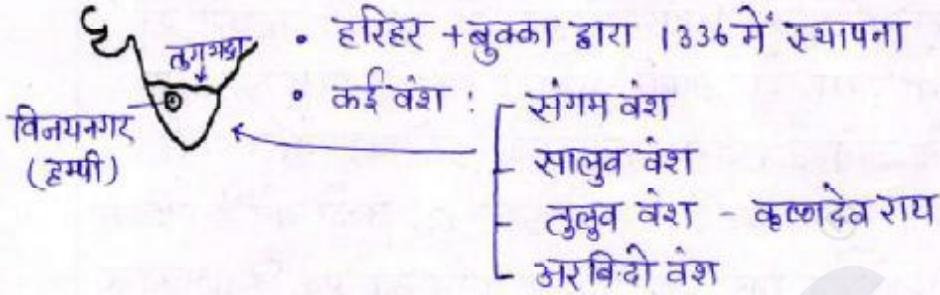
चोल मंदिरों के विशेष लक्षण

- चोल मंदिरों का निर्माण ग्रेनाइट के बड़े-बड़े पत्थरों से किया गया ये अपनी भव्यता एवं विशालता के लिए जाने जाते हैं। जैसे तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर की ऊचाई 190 फिट है इसमें कुल 13 तल्ले बने हैं। शिखर के सर्वोच्च भाग पर 34 टन वजन का एक विशालकाय स्तूपिका बनी है।
- चोल मंदिर वास्तु के साथ-2 मूर्तिकला एवं चित्रकला के भव्य उत्तम उदाहरण हैं। मंदिरों के बाहरी भागों दिवारों स्तंभों आदि पर रामायण महाभारत तथा पौराणिक कथाओं के अनेक देवी देवताओं की खुबसूरत एवं कलात्मक प्रतिमाएँ बनी। ये मूर्तियाँ काफी बारीक एवं साज सज्जा से युक्त हैं जैसा सोनार आभूषणों में करते हैं।
- वृहदेश्वर जैसे मंदिर में देवी-देवताओं के पौराणिक कथा के चित्र भी दिवारों पर बने हैं।

चोल मंदिरों की विशालता, भव्यता एवं साज सज्जा इतनी आकर्षित करती है कि फारग्यूसन ने कहा है कि
“चोलों ने दैत्यों की तरह सोचा तथा जौहरीयों की तरह पूरा किया।”

- Q. चोल मंदिरों की मुख्य विशेषताओं का निरूपण कीजिए।
- Q. द्रविड़ वास्तुकला की शैली को किस प्रकार चोलों ने सर्वोत्कृष्ट रूप दिया। व्याख्या कीजिए।
- Q. चोलों ने दैत्यों की तरह सोचा तथा जौहरीयों की तरह पूरा किया चोल मंदिरों के संदर्भ में उक्त कथन के

* विजयनगर मंदिर (14-16 शताब्दी)



विशेषताएं

1. वर्गाकार गर्भगृह . पिरामिडाकार शिखर , सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका ।
2. गर्भगृह के चारो तरफ अंतराल
3. विजयनगर के मंदिरों में गर्भगृह के सामने अनेक मंडपों का निर्माण किया गया । जैसे महामंडप , कल्याणमंडप (देवी देवताओं का विवाह स्थल) यज्ञमंडप (यज्ञ बलि दी जाती थी) अमन मंदिर (सहायक मंदिर) आदि ।
4. विजयनगर के मंदिर अत्यंत खूबसूरत एवं साज सज्जा युक्त हैं । मंदिरों के बाहरी भागों , स्तंभों आदि पर अत्यंत बारीक एवं खूबसूरत शिल्प बनाए गए हैं । जिसमें उड़ते हुए अश्व , कमलपुष्प आदि के शिल्प काफी अगोखे हैं
5. विजयनगर के मंदिरों का गोपुरम् पल्लवों एवं चोलीयों से भी भरा है ।
6. प्रमुख मंदिरों में नल्लौर का विष्णु मंदिर तथा हम्पी (विजयनगर) मंदिर समूह हैं । जिसके तहत * पम्पा पाती , वरदराज विठ्ठल स्वामी हजारों एवं विरूपाक्ष आदि आते हैं ।

➔ नायक शैली के मंदिर



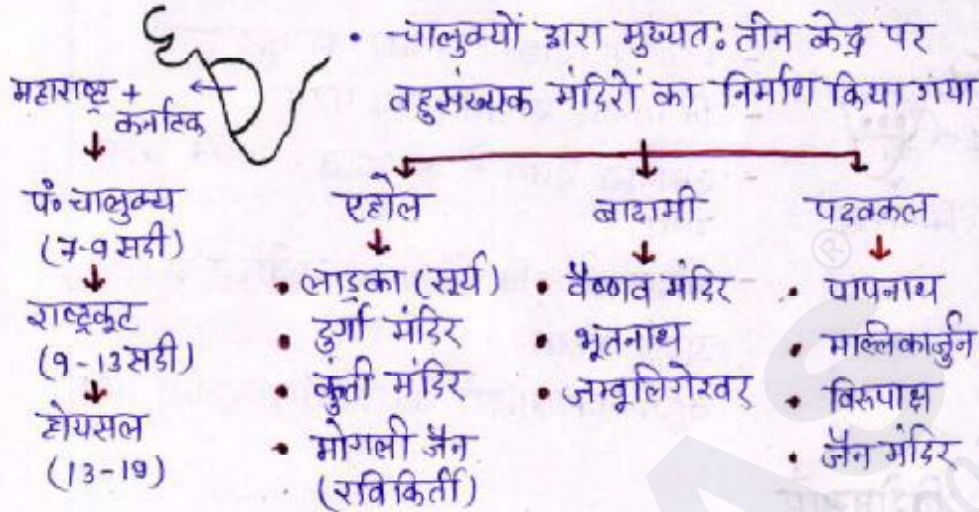
- 1565 में राक्षसी तांगड़ी का युद्ध हुआ
- विजयनगर साम्राज्य का पतन
- स्थानीय सामंतों का उदय - नायक कहा गया
- मंदिरों की द्विज शैली को सर्वोच्च स्तर प्रदान किया।
- बहुसंख्यक मंदिरों का निर्माण कराया गया

विशेषताएँ

1. सभी द्विज विशेषताएँ - वर्गकार गर्भगृह, पिरामिडाकार शिखर, स्तूपिका, अन्तराल, बहुसंख्यक कक्षा/मंडप
2. नायकों के तहत भारी संख्या में गोपुरम् का निर्माण कराया गया जिनकी संख्या 2, 3, 5, 7, 21 तक मिलती है।
3. मंदिरों की साज सज्जा एवं अलंकरण काफी खूबसूरत है जिसका प्रमुख उदाहरण रामेश्वरम् का गलियारा है। ऐसा लगता है कि यहाँ आते आते द्विज वास्तुकला ने अपना सर्वोच्च स्तर प्राप्त कर लिया है।
4. नायक मंदिर स्थापत्य मूर्ति एवं चित्रकला के अद्भुत संगम हैं। बाहरी द्वारों गोपुरम् के बाहरी भागों, स्तंभों आदि पर अत्यन्त कलात्मक ढंग से अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनायी गयी हैं मद्रुरे के मीनाक्षी मंदिर आदि में अत्यन्त खूबसूरत चित्रण भी किया गया है।
5. नायक कालीन प्रमुख मंदिरों में रंगनाथ मंदिर, मीनाक्षी मंदिर तथा रामेश्वरम् मंदिर मुख्य हैं।
6. नायकों ने न केवल मंदिरों का निर्माण कराया बल्कि पुरा मंदिर शहर विकसित किया। यहाँ मंदिर घाटन में ही बाजार, आवास कारखाना आदि बने हैं।

⇒

वैसर शैली के मंदिर



⇒

राष्ट्रकूट शैली के मंदिर

- ↳ चालुक्यों को पराजित कर सत्ता में आये
- ↳ इन्होंने भी वैसर शैली में अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया।
- ↳ प्रमुख मंदिर
 1. एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर
 2. एलोरा स्थित एकाशम जैन मंदिर
 3. विश्वनाथ मंदिर (पदवकल)
 4. नरायण मंदिर (पदवकल)

• एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर / एकाशम मंदिर

एलोरा की गुफाएं महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित हैं। एलोरा कलाओं का संगम है जहां वास्तुकला मूर्तिकला एवं चित्रकला तीनों का अद्भुत समागम दिखाई देता है। यहां ब्राह्मण बौद्ध जैन तीनों धर्मों से संबंधित अनेक कलाकृतियों का निर्माण हुआ है।

विशेषताएं

एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर राष्ट्रकूट शासक कृष्ण-1 द्वारा निर्मित कराया गया।

1. कैलाशनाथ मंदिर शैलकृत वास्तु का अद्भुत उदाहरण है एक समग्र पहाड़ी की ऊपर से काटकर इसका निर्माण किया गया है। इसका क्षेत्रफल 276×154 फुट है।
2. मंदिर के तहत एक गर्भगृह (भगवान शिव की समर्पित) तथा कई 'मंडपों' (कक्ष) का निर्माण किया गया है। इसका प्रवेशद्वार पश्चिम दिशा की ओर है। एलोरा कैलाशनाथ मंदिर स्थापत्य कला एवं अभियांत्रिकी का उत्तम प्रदर्शन है।
3. कैलाशनाथ मंदिर की वास्तु संरचना के साथ-2 इसका शिल्पांकन भी काफी अद्भुत है। मंदिर में पौराणिक कथाओं के विषयों के अनेक खूबसूरत प्रतिमाओं का निर्माण किया गया है। रावण द्वारा कैलाश पर्वत उठाने, विष्णु के नरसिंह अवतार शिव-पार्वती विवाह, शिव का वैभव रूप शिव का तांडव नृत्य तथा पार्वती का वास्यनृत्य का शिल्पांकन अद्भुत है। यहां अनेक धर्मनिरपेक्ष मूर्तियां भी बनी हैं। पहाड़ी की काटकर हाथियों के झुण्ड की मूर्तियां बनी हैं जो काफी कलात्मक हैं।

एलोरा की वास्तुगत एवं शिल्पगत विशेषताओं को देखकर कहा जा सकता है कि यह भारत में विकसित शैलकृत वास्तुकला का सर्वोत्कृष्ट रूप है। इसके पूर्व चैत्य विहार एवं मंदिर भी पहाड़ी को काटकर बनाए गए थे लेकिन एलोरा उन सभी में सबसे बेहतर है।

• होयसल मंदिर

राष्ट्रकूटों के बाद दक्कन में होयसल शासकों का आगमन हुआ। इनके द्वारा भी अनेक मंदिरों का निर्माण कराया गया। होयसल मंदिर भी बेसर शैली के मंदिर हैं। इनकी कुछ निजी विशेषताएं भी हैं। जैसे-

1. यहां के मंदिरों का गर्भगृह ताराकृतिक / बहुकोणीय रूप में बना है।
2. दो-दो गर्भगृह भी बने हैं।
 - a. होयसलेश्वर मंदिर (हैलविड, कर्नाटक)- इसमें दो मिलता हैं।
 - b. चन्नाकेश्वर मंदिर (वैल्लूर कर्नाटक)
 - c. पदक्कल एवं मैसूर के मंदिर

Dhyeya IAS Now on Telegram

We're Now on Telegram



Join Dhyeya IAS Telegram

Channel from the link given below

"https://t.me/dhyeya_ias_study_material"

You can also join Telegram Channel through
Search on Telegram

"Dhyeya IAS Study Material"

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter

(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्सक्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारे ईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें** अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से **Subscribe** करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

Join Dhyeya IAS Whatsapp Group by Sending "Hi Dhyeya IAS" Message on 9205336039.

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter

Step by Step guidance for Subscription:

- **1st Step:** Fill Your Email address in form below. you will get a confirmation email within 2 min.
- **2nd Step:** Verify your email by clicking on the link in the email. (Check Inbox and Spam folders)
- **3rd Step:** Done! you will receive alerts & Daily Free Study Material regularly on your email.

Subscribe



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर Dhyeya IAS Now on Whatsapp

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर
मुफ्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध है

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने
के लिए 9355174442 पर **"Hi Dhyeya IAS"**
लिख कर मैसेज करें

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड़ सकते हैं
www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in



ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने के लिए **9355174442** पर **"Hi Dhyeya IAS"** लिख कर मैसेज करें

**नोट: अगर आपने हमारा Whatsapp नंबर अपने Contact List में Save नहीं किया तो आपको
प्रीतिदिन के मैटेरियल की लिंक प्राप्त नहीं होंगी इसलिए नंबर को Save जरूर करें।**

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड़ सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400